मसीह का कार्य अनन्त जीवन की आशा को जन्म देता है (तीतुस 1)

''मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे'' (तीतुस 1:5)।

अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा परमेश्वर की ओर से, जो झूठ नहीं बोल सकता, समय के आरज़्भ होने से पूर्व की गई थी। उन लोगों के साथ जो पहले झूठे और पेटू के रूप में प्रसिद्ध थे और जो पहले केवल वर्तमान में ही जीते थे यह कितनी शानदार प्रतिज्ञा थी (1:12)! तीतुस के नाम अपने पत्र के आरज़्भ और अन्त में, पौलुस ने क्रेते के लोगों के बारे में अपनी इच्छा व्यज़्त की जो अस्थाई जीवन के आगे देखने और अपनी आशा अनन्त पर लगाने के लिए मसीही बने थे (1:2; 3:7)।

पौलुस ने अपना पत्र मसीह के कार्य पर ध्यान करते हुए और यह बताते हुए आरज़्भ किया कि तीतुस कैसे क्रेते के लोगों को छुटकारे में परिपज़्वता के लिए अगुआई दे सकता है (1:1-4)। उसने विस्तार से अध्यक्षों की योग्यताएं बताते हुए कलीसिया में निरन्तर अगुआई करने के लिए उनकी आवश्यकता पर ध्यान दिया (1:5-16)। पौलुस को मालूम था कि क्रेते के लोगों को उनके विद्रोहात्मक जीवन से, सही ढंग से अगुआई देकर, विश्वास में परमेश्वर के और निकट लाया जा सकता है।

पाठ 1: मसीह का कार्य और छुटकारा (1:1-4)

विश्वास में अपना ''सच्चा पुत्र'' लिखने के तुरन्त बाद पौलुस ने मसीह में छुटकारे की सज़्भावना और सामर्थ बताई।

छुटकारे का मार्ग (आयत 1)

भौतिकवाद से ईश्वरीय सोच में बढ़ने का मार्ग पद 1 में: ''उस सत्य की पहचान'' में बढ़ना बताया गया है ''जो भज़्ति के अनुसार है।''

पौलुस ने कहा कि वह ''प्रेरित''[1] कहलाने से पहले परमेश्वर का ''दास'' था। अच्छा सेवक बने बिना यीशु का अच्छा संदेशवाहक नहीं बना जा सकता।

फिर, पौलुस ने परमेश्वर के चुने हुओं पर विश्वास अर्थात ''परमेश्वर के चुने हुए लोगों'' के विश्वास की बात की। यह कैल्विनवादी शिक्षा नहीं है जिसके अनुसार परमेश्वर ने कुछ लोगों (अर्थात चुने हुओं) को बचाने के लिए पहले से चुन लिया है जबकि दूसरों को दण्ड देने के लिए निर्दयतापूर्वक पहले से ही ठहरा दिया है। लोगों को छुड़ाने की परमेश्वर की एक योजना थी, और उसे पहले से ज्ञान था कि कौन लोग छुटकारे की उसकी योजना को स्वीकार करेंगे। वह जानता था कि जो लोग उसका आदर करेंगे और धार्मिकता का काम करेंगे अर्थात जो उद्धार पाने के लिए ठहराए हुए हैं वे ''चुने हुए'' हो जाएंगे।

वचन का ''विश्वास'' और ''ज्ञान'' दोनों ही भक्ति के लिए आवश्यक हैं। जो लोग ''यीशु पर विश्वास'' करने की कोशिश करते हैं परन्तु वचन को नहीं जानते उन लोगों की हालत ऐसी है जैसे बिना नींव के मकान बनाने वाले हैं। दूसरी ओर जो लोग वचन को जानते हैं परन्तु मसीह की योजना और सिद्धांतों में विश्वास करने के लिए अपने ऊपर लागू नहीं करते वे उलझन और झगड़े का कारण बनते हैं।

चेलों के लिए छुटकारे का लक्ष्य ''भक्ति''[2] में पाया जाता है। पौलुस का लक्ष्य लोगों को क्रेते के वासियों के लापरवाही वाले सुस्त माहौल से निकालकर परमेश्वर के साथ बिठाना था। पौलुस थोड़ी देर की जीवन शैली के बजाय सच्चाई, विश्वास और आशा को स्थान देता था (1:11-13)।

छुटकारे का परिणाम (पद 2क)

भक्ति हमें ''अनन्त जीवन की आशा[3]'' के साथ छोड़कर हमारी आंखें स्वर्ग की ओर लगा देगी (1:2क)। मसीह के साथ उठाए जाने के कारण (रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 3:1, 2) हमारा मन पृथ्वी की बातों से ऊपर उठकर ऊपर की बातों में लगना चाहिए। यह भौतिकवाद का कैसा अन्त है!

छुटकारे की विश्वसनीयता (पद 2ख)

जो कुछ पौलुस बता रहा था उसका आधार ठोस है, ज़्योंकि यह यहोवा परमेश्वर की ओर से है, ''जो झूठ बोल नहीं सकता'' (1:2ख) इब्रानियों 6:18 कहता है ''दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बंध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें।'' यह क्रेते के लोगों के बिल्कुल विपरीत है जिन पर ''झूठे'' होने का ठप्पा लगा था (1:12)। छुटकारा ''जगत की उत्पत्ति से पहले'' (इफिसियों 1:4-6) ही अपने लोगों के साथ परमेश्वर की एक योजना और प्रतिज्ञा के रूप में था (देखिए यूहन्ना 17:6, 9, 24)।

छुटकारा प्रकट किया गया (पद 3)

परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर, परमेश्वर की योजना उसके पुत्र के द्वारा ''प्रचार के

द्वारा'' प्रकट की गई (1:3; गलतियों 4:4, 5; यूहन्ना 6:44-68; 17:6-21; इफिसियों 3:3-5; इब्रानियों 1:1-5)। यह योजना दिखाई ही नहीं गई बल्कि मसीह में ''प्रकट''[4] भी की गई। पवित्र शास्त्र में लिखी गई नई वाचा में, अब हम उस महिमामय सुसमाचार को पढ़ते हैं जिसे पहले स्वर्गदूतों को भी देखने की अनुमति नहीं थी (1 पतरस 1:10-12; 1 तीमुथियुस 1:11)। अनादि परमेश्वर अपने सर्वोच्च और पवित्र स्थान से ''नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित'' करने के लिए नीचे आ गया था (यशायाह 57:15)।

यह छुटकारे की योजना पौलुस के माध्यम से पहुंचाई गई। इस तरह हमें ईश्वरीय ''आज्ञा''[5] प्राप्त होती है। जिस शब्द का इस्तेमाल पौलुस ने किया उससे उसकी जागरूकता का संकेत मिलता है कि यह एक काम था। हाय उस किसी भी व्यक्ति पर जो परमेश्वर के संदेश देने के लिए कदम उठाता है और उस संदेश को विश्वासपूर्ण ढंग से हाथ में लेने की जिम्मेदारी में चौकस नहीं है (2 तीमुथियुस 2:15; 1 पतरस 4:11)।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने आज्ञाएं दी हैं किसी भी ''मापदण्ड नहीं'' की शिक्षा को खत्म कर देता है! हमें जीवन के सागर में बिना कप्तान के बहते हुए भटकने के लिए नहीं छोड़ा गया। हम जान सकते हैं कि क्या सही है और क्या गलत। अधार्मिकता के विषय में परमेश्वर के क्रोध के साथ-साथ उसकी धार्मिकता भी प्रकट हो चुकी है। *हमारे पास कोई बहाना नहीं* (रोमियों 1:16-20)। पौलुस को इन सभी आज्ञाओं को देने के लिए परमेश्वर की ओर से चुना गया था, और हम इन आज्ञाओं को समझ सकते हैं (इफिसियों 3:3-5)।

छुटकारा प्राप्त करने वाले (पद 4क)

पौलुस ने तीन तरह से तीतुस की प्रशंसा की: (1) वह सब लोगों के साथ अनन्त जीवन की आशा को बांटने के चलते रहने वाले महिमामय कार्य में भागीदार बना था। (2) पौलुस द्वारा तीतुस को ''मेरा सच्चा पुत्र''[6] कहा गया था। तीतुस ने आज्ञा मानने के साथ धोखा नहीं किया था; वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र था (यूहन्ना 3:3-5; 1 कुरिन्थियों 12:13; गलतियों 3:26, 27; मरकुस 16:15, 16)। (3) तीतुस ''विश्वास की सहिभागिता'' में (जिसका अर्थ हो सकता है ''सामान्य विश्वास के अनुसार'') था। पौलुस और तीतुस परमेश्वर के सहकर्मी थे (1 कुरिन्थियों 3:9)। वे उस विश्वास की भलाई के लिए भी काम करते थे। यह छुटकारा, पा लेने के बाद *दूसरों में बांटना आवश्यक है*!

छुटकारे के प्रतिफल (पद 4क)

''पिता'' के रूप में परमेश्वर और ''उद्धारकर्ता'' के रूप में यीशु ईश्वरीय विरासत और पापों की क्षमा के दोहरे लाभों की घोषणा करते हैं जिन्हें हम अपने आप नहीं पा सकते थे। छुटकारे के साथ बड़े-बड़े पुरस्कार भी दिए जाते हैं। उनमें से एक ''अनुग्रह'' है।[7] अनुग्रह ''शांति''[8] (1:4ख) के लिए परमेश्वर का पहला कदम है।

छुटकारे की आशिषें, जैसे कि पतरस ने तीतुस की पत्री के इस परिचय में बताई हैं, पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का ऐलान करती हैं।

पाठ 2: मसीह का कार्य और अध्यक्ष (1:5-16)

पौलुस चाहता है कि क्रेते के टापू पर हर मण्डली में योग्य ऐल्डर हों। परमेश्वर ने कलीसिया के इसी प्रकार बढ़ने की योजना बनाई थी। मसीह के कार्य को हानि पहुंचाने के शैतान के प्रयासों के कारण कलीसिया को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो स्थिर और दृढ़ हों (1 कुरिन्थियों 16:13; इफिसियों 4:11-16; 6:10-18)। 10 और 11 आयतें इस तथ्य की फिर से पुष्टि करती हैं।

अध्यक्षों के विषय में कार्य (पद 5)

एक सुसमाचार प्रचारक का काम केवल सुसमाचार का प्रचार करने से ''मसीह में'' विश्वास करने वाले तथा बपतिस्मा लेने वाले लोग तैयार करके या मण्डलियां स्थापित करना ही नहीं है। उसे दिया गया काम तभी *पूरा* होता है जब सब सदस्यों में परिपज़्वता के लिए इन सभी कदमों का यह परिणाम हो कि हर मण्डली में योग्य ऐल्डर नियुज़्त किए जा सकें (1:5)। जिस प्रकार बच्चों के परमेश्वर के उद्देश्य के लिए सही ढंग से बढ़ने के लिए माता-पिता का योगदान है वैसे ही *परमेश्वर के परिवार में अगुआई देने के लिए योग्य ऐल्डर वे परिपज़्व अगुवे होते हैं जो इस बात को सुनिश्चित कर सकते हैं कि मसीह में बालक को ईश्वरीय स्वभाव में बढ़ने के लिए सुरक्षित, समझदार और सुसंगठित माहौल मिले* (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:1-8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:11-18; इब्रानियों 13:7, 15-17)।[9]

अपनी ज़िज़्मेदारी के महत्व का अहसास करते हुए पौलुस ने इसे प्राथमिकता के तौर पर प्रस्तुत किया। पौलुस ने तीतुस को क्रेते में ''इसलिए''[10] ही छोड़ा था। इस शज़्द का मूल विचार अपना पक्ष दिखाना या आनन्द देना है। यहां पर दिया गया काम उस मण्डली के लिए अच्छा फल देता है जो अपने आप को एक सुयोग्य सुसमाचार प्रचारक के द्वारा दी गई सच्चाई से बाइबल के अनुसार ढालता और आकार देता है।

पौलुस ने तीतुस से ''रही हुई[11] बातों को सुधारने[12]'' के लिए कहा। किसी गाड़ी की मोटर की थोड़ी बहुत मरज़्मत करने या किसी जगह को थोड़ा बहुत साफ़ करके उसकी खूबसूरती को बढ़ाने पर विचार करें। मण्डली के जीवन में इसे सुन्दरता और पर्याप्तता देने के लिए पाई जाने वाली कमियों पर इन विचारों को लागू करें। इन बातों को तरतीब देना सुसमाचार प्रचारक के काम का एक महत्वपूर्ण भाग है।

हर मण्डली में विस्तार की ओर ध्यान देना एक व्यापक आवश्यकता है। एक मण्डली ने कलीसिया के विकास का अध्ययन करवाया और पाया कि उनके प्रयास और धन का 80 प्रतिशत भाग सेवा के उन क्षेत्रों में जा रहा था जो 20 प्रतिशत फल दे रहे थे, जबकि 80 प्रतिशत फल उनके 20 प्रतिशत प्रयास से आता था। स्पष्ट तौर पर उन्हें और अधिक कुशलता पाने के लिए अपने काम करने के ढंगों में सुधार लाने की आवश्यकता थी। किसी भी मण्डली के लिए पूरी क्षमता से काम करने की आशा करने से पहले, जानकारी एकत्र करना आवश्यक है।

1. मण्डली के लोगों के आयु वर्ग के बारे में जानकारी लें। ज़्या अधिकतर सदस्य साठ वर्ष के या इसके ऊपर हैं ? ज़्या अधिकतर सदस्य बीस से चालीस वर्ष की आयु वर्ग के हैं ?

2. सदस्यों द्वारा प्राप्त ट्रेनिंग के बारे में जानें और देखें कि वे किस बात के लिए ट्रेनिंग पाना चाहते हैं। ज़्या वे ऐल्डर बनना चाहते हैं या डीकन या बाइबल ज़्लास में पढ़ाने वाले ?

3. सदस्यों की घरेलू स्थिति के बारे में जानें। कितने दज़्पज़ि सदस्य नहीं हैं ? ज़्या नवयुवकों ने सुसमाचार को ग्रहण कर लिया है ? किसी का तलाक तो नहीं हुआ ? यदि हुआ है तो वे कितने लोग हैं ? कितने परिवार विश्वास में दृढ़ हैं और सक्रिय हैं ?

4. सदस्य बनाम उपस्थित रहने वाले; बाइबल ज़्लास में उपस्थित (रविवार प्रात) बनाम मुज़्य सभा; रविवार प्रात: बनाम रविवार शाम और बुधवार की आराधना में आने वाले लोगों का अनुपात देखें।

5. आराधना के सज़्बन्ध में सदस्यों द्वारा प्राप्त ट्रेनिंग के बारे में जानें। कितने लोग आराधना के कार्यों में भाग लेते हैं ?

6. सदस्यों द्वारा दिए जाने वाले चंदे का तरीका जानें (देखें प्रेरितों 2:42-47; 4:32-5:11; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8; 9)।

7. कलीसिया द्वारा सुसमाचार सुनाने के लिए स्थानीय और बाहरी दोनों प्रयासों के बारे में जानें कि कितना धन कितने सदस्यों द्वारा दिया जाता है।

कम से कम इन बुनियादी कारकों को जाने बिना मण्डली को यह पता नहीं चल सकता कि वह कैसे बढ़ी है, कहां उसे बढ़ना चाहिए या किस बात में ''सुधार'' की गुंजाइश है।

पौलुस चाहता था कि तीतुस हर नगर में ''प्राचीनों को नियुज़्त''[13] करे। ''नियुज़्त''[14] शज़्द पर ध्यान दें। इस शज़्द में लगता है कि *नियुज़्ति* पर उतना ज़ोर नहीं है जितना *तैयारी* पर है। सुसमाचार प्रचारक का महत्वपूर्ण काम यह देखना है कि ये लोग *कार्य में और व्यवहार में* वह कार्य करने को तैयार हैं जो ऐल्डरों को करने के लिए बुलाया जाता है।[15] मण्डली के भविष्य को निश्चित रूप से प्रभावित करने वाले निर्णयों और कामों के लिए केवल सुझाव ही आवश्यक नहीं होते। पौलुस ने तीतुस को यह काम सौंपकर ''निर्देश''[16] दिया। तीतुस के लिए यह किसी अन्य सुसमाचार प्रचारक के लिए जिसे मण्डली के जीवन में कोई कमी या अव्यवस्था मिलती है कोई विकल्प नहीं था। इसके लिए कोई समयसारणी नहीं दी गई, ज़्योंकि हर मण्डली की आवश्यकता अलग-अलग होती है। परन्तु सुसमाचार प्रचारक को काम के पूरा होने तक इस लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए!

अध्यक्षों के लिए योग्यताएं (पद 6-9)[17]

फिर पौलुस ने एक ऐल्डर के लिए होने वाली योग्यताओं की एक सूची दे दी। सूची के आरज़्भ में (और फिर आयत 7 में) ''निर्दोष''[18] शज़्दों पर ध्यान दें। इस विशेषता को इस प्रकार से रखा गया है ज़्योंकि यह ऐल्डर के जीवन में पाए जाने वाले हर दूसरे गुण से जुड़ा और उसे योग्य बनाता है (1:6-9)।

''निर्दोष''

I. पारिवारिक व्यज़्ति के रूप में
   1. एक ही पत्नी का पति (यू.: *mias gunaikos aner*)
   2. जिसके बच्चे विश्वासी हों, उन पर लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो

II. निजी जीवन के सज़्बन्ध में

   नकारात्मक –
   3. न हठी
   4. न क्रोधी
   5. न पियज़्कड़
   6. न मारपीट करने वाला
   7. न नीच कमाई का लोभी

   सकारात्मक –
   8. पहुनाई करने वाला
   9. भलाई का चाहने वाला
   10. संयमी
   11. न्यायी
   12. पवित्र
   13. जितेन्द्रिय

III. शिक्षा के विषय में
   14. विश्वास योग्य वचन पर स्थिर रहने वाला
   15. खरी शिक्षा से उपदेश दे सके
   16. विवादियों का मुंह भी बंद कर सके

''केवल अच्छा जीवन जीकर'' इन शर्तों को पूरा नहीं किया जा सकता। शिक्षक के रूप में, उसके लिए ''योग्य''[19] होना आवश्यक है। ''उपदेश''[20] देने के योग्य होने के लिए वचन में योग्य और दृढ़ होना आवश्यक है। अगली सारी योग्यताएं उस व्यज़्ति में होनी आवश्यक हैं जो विश्वासयोग्य वचन (''खरी शिक्षा'') में स्थिर रहता है। आज कितने ऐल्डर ज़रूरतमंद लोगों के साथ, एक को सांत्वना देते, दूसरे की ताड़ना करते, किसी और को हंसाते, दूसरे को मज़बूत करते और किसी और को समझाते हुए उनके सामने परमेश्वर के वचन को खोलकर यह सब कर सकते हैं? इस सकारात्मक बिनती के लिए केवल अच्छा जीवन ही काफी नहीं है।

शिक्षा में ऐल्डर के नकारात्मक पहलू का उल्लेख आयत 9 में मिलता है। विवादी[21] उसका सामना करेगा। कितना जिद्दी है वह! यही है जिसका ''मुंह बंद''[22] करने के लिए ऐल्डर का योग्य होना आवश्यक है? ज़्या इससे उस झूठे शिक्षक को उसकी गलती बताकर सुधारा जा सकता है? कलीसिया की वास्तविक आवश्यकताएं यही हैं। संवेदनशील मन वाले और ''सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने'' के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति को अपना काम करना आवश्यक होगा (2 तीमुथियुस 2:15)। परमेश्वर के लोगों में काम करने और उनकी निगरानी करने की इच्छा करने वाले ऐल्डरों के लिए ये योग्यताएं कितनी व्यावहारिक हैं (इब्रानियों 13:17)।

आदमी के परिवार के विषय में, कभी किसी को एक पुरुष द्वारा एक स्त्री से विवाह करने में कोई बुराई नज़र नहीं आई।[23] न ही किसी आदमी के विश्वासी बच्चे होने में किसी को बुरा लगेगा यदि उन बच्चों पर ''हठी होने''[24] या ''निरंकुशता''[25] का दोष न लगा हो। किसी का परिवार बहुत अच्छा होना और उसके बच्चों पर किसी प्रकार का कोई आरोप न लगने पर परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया की सज़्भाल करने के योग्य होने का लिए एक बड़ा कदम है (1 तीमुथियुस 3:4, 15)।

उसके निजी जीवन के सज़्बन्ध में, ऐल्डर को कई योग्यताओं को पूरा करना आवश्यक है। इन शर्तों को पढ़कर हम इस बात से प्रभावित होते हैं कि वे ऐल्डरों के काम के कितना अनुकूल हैं। ऐल्डरों का सज़्बन्ध उन लोगों से है जो आपसी सज़्बन्धों के कारण, परिवार के सदस्यों की तरह आपस में मिलते-जुलते हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-27)। नकारात्मक सूची में, ''हठी'' मन वाला व्यक्ति दूसरों की निगरानी करने के बजाय अपनी रुचियों पर भी ध्यान देगा (इब्रानियों 13:17; फिलिप्पियों 2:19, 20)। ''क्रोध करने वाला'' गड़बड़ करने वाले लोगों को समझाने के समय शांत होकर काम नहीं कर पाएगा। (1 थिस्सलुनीकियों 5:12-14)। कोई उपद्रवी या झगड़ा करने वाला निश्चित रूप से झुंड के लिए अच्छी मिसाल नहीं होगा (1 पतरस 5:3)। ऐल्डरों का काम मण्डली के वित्तीय मामलों का हिसाब रखना होता है (प्रेरितों 11:30), इसलिए ऐल्डर के लिए ''नीच कमाई का लोभी'' होना कितना गलत होगा! (देखिए यूहन्ना 12:4-6.)

एक ऐल्डर को दिए जाने वाली जिज़्मेदारियों के लिए उसे तैयार करने के लिए सकारात्मक व्यक्तिगत गुणों का भी उतना ही महत्व है। एक चरवाहे (''पास्टर या पासबान''; इफिसियों 4:11; प्रेरितों 20:28) के लिए जो अपने आप को भटकने वाली भेड़ों के निकट रखता है (देखिए लूका 15:3-7) मेहमाननवाज़ होना स्वाभाविक है। ज़्योंकि उसका काम झुंड को ''शुभ समाचार'' से चराना और दूसरे सदस्यों के अनुसरण के लिए मिसाल पेश करना है, इसलिए निश्चित तौर पर उसके लिए भलाई का चाहने वाला होना आवश्यक है। संवेदनशील होना (अपने आप को काबू में रखना) उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है जिसने यह ध्यान रखना है कि ''कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)। निश्चित रूप से उन लोगों के साथ जो फूट डालने वाले हों व्यवहार करने के लिए और उन्हें अनुशासित करने वाले के लिए (तीतुस 3:10) न्याय करने वाला होना आवश्यक है, जिसके

लिए दृढ़ता और स्पष्टता दोनों आवश्यक हैं। भाइयों को रात-दिन आंसुओं के साथ समझाने के लिए आवश्यक आत्मिक गहराई (प्रेरितों 20:31, 35) बता देगी कि ऐल्डरों के लिए ''भज्ञ्त'' और अपने आप पर काबू रखने वाले[26] होना ज़्यों आवश्यक है।

ऐल्डरों को दिए गए परमेश्वर के काम को करने के लिए ये गुण कितने उपयुज्ञ्त हैं! जैसे पौलुस ने आगे और समझाया कि ऐल्डरों को इतने गुणी होना ज़्यों आवश्यक है।

अध्यक्षों की आवश्यकता (पद 10-16)

परमेश्वर ने कभी कोई शर्त बिना कारण नहीं दी है। जिस प्रकार बच्चों को माता-पिता की शर्तों के लिए सामान्य ज्ञान को समझना आवश्यक है वैसे ही भाइयों के लिए यह समझना आवश्यक है कि उनका पिता अपने बच्चों से ऐसी मांगें ज़्यों करता है। परमेश्वर द्वारा की गई हर मांग युज़्तिसंगत है।

डांवांडोल सदस्य अपने इर्द गिर्द से प्रभावित हो सकते हैं (पद 10-14)

पौलुस ने ऐलान किया कि बहुत से लोग इन तीन श्रेणियों में से एक में आते हैं और इनमें से सब गड़बड़ी करने वाले हैं (1:10, 11)।

कुछ लोग ''निरंकुश''[27] हैं। वे किसी भी ऐसे सिद्धांत का विरोध करेंगे जो उनके व्यवहार पर रोक लगाए या उन्हें नियन्त्रित करता हो। वे बिना कारण के विद्रोह करने वाले लोग हैं। वे काम करने के बजाय प्रतिक्रिया करेंगे, साथ जुड़ने के बजाय विद्रोह करेंगे। उन्हें सच्चाई में गड़बड़ करना अच्छा लगता है!

ये लोग ''बकवादी''[28] लोगों से मिल जाते हैं। हो सकता है कि वे बातें तो बहुत करने वाले हैं, परन्तु काम की नहीं। उनकी बातों से कोई आहत तो हो सकता है परन्तु उससे सहायता नहीं मिलती। केवल प्रभु ही जानता है कि इन बोलने वालों ने कितना समय बर्बाद किया और कितने कानों ने बिना किसी कारण इनकी बात पर ध्यान दिया।

अगले गुट वाले लोग इससे भी खतरनाक स्तर पर काम करते हैं, ज़्योंकि वे ''धोखा देने वाले हैं।''[29] लगता है कि यह खरी शिक्षा से पैदा किए गए विश्वास से जीवन बिताने के बजाय शरीर के कामों को महिमा देते हुए परमेश्वर के लोगों को *भावनाओं से चलाने* वाले करिश्माई प्रयासों के विषय में कहा गया है। यह तथ्य कि ऐसे धोखा देने वाले लोग झुंड में ही हैं 1:9 में वर्णित योग्य लोगों की आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाता है।

दुख की बात यह है कि इन तीनों गुटों का खतरनाक और विनाशकारी ढंग से लोगों पर प्रभाव होता है। गड़बड़ करने वाले जिन लोगों का पौलुस ने वर्णन किया वे ''घर के घर बिगाड़ देते[30]'' थे (1:11); अर्थात वे पूरे के पूरे परिवारों के विश्वास का नाश कर रहे थे। जब एक व्यज़्ति कलीसिया को छोड़कर जाता है, तो यह खेद का कारण होता है; परन्तु जब पूरे परिवार ही फिर जाएं, तो उनके वापस आने की उज़्मीद बहुत कम होती है। परमेश्वर ऐसा न करे कि कलीसिया में इस तरह का कोई कार्य हो और ऐल्डर या दूसरे भाई उसकी ओर ध्यान न दें! ''ऐसी बातें सिखाकर जो उन्हें सिखानी नहीं चाहिए थीं'' वे 1:9 की खरी

शिक्षा का विरोध कर रहे थे। धन लोलुप होने के तत्व का पौलुस ने खुलकर विरोध किया: वे ''नीच कमाई के लिए'' झूठी शिक्षाओं को बढ़ावा दे रहे थे।

फिर पौलुस ने छठी शताब्दी ई.पू. के क्रेती कवि, एपीमिनाइडस को इस तथ्य के लिए अपने साक्षी के रूप में चुना कि क्रेते के लोग ''झूठे, दुष्ट पशु, और आलसी पेटू'' (1:12) के रूप में बदनाम थे। ''उन्हीं का'' भविष्यवक्ता की बात उनकी आलोचना के बजाय उनको सम्मान देने के जैसा था, परन्तु उसने उन पर आरोप लगाया।

पौलुस ने आज्ञा दी, ''उन्हें कड़ाई से[31] चितौनी[32] दिया कर'' (1:13)। इस काम को पूरा करने के लिए वचन के ज्ञान और बड़े साहस की आवश्यकता है, पर याद रखें कि है यह एक आदेश ही। लोगों की आत्माएं और घरों के घर दांव पर लगे हैं। यही लोग परिवर्तित होकर ''विश्वास में पक्के'' हो सकते हैं।

सुधारने के लिए ईश्वरीय आज्ञा को (1) डर के कारण दूर खड़े रहकर, (2) यह कहकर कि यह बहुत बुरी बात है, (3) गड़बड़ी करने वालों *से* बात करने के बजाय उनके *बारे* में बातें करके, या (4) उनसे वैसे ही कठोरता से जैसे वे कठोर हैं बात करके ईश्वरीय आज्ञा को पूरा नहीं किया जा सकता। नये-नये निश्वासी इनमें से किसी एक से या किसी और ढंग से प्रतिक्रिया कर सकते हैं, क्या आप इस काम को पूरा करने के लिए आत्मिक तौर पर तैयार हैं ?

विवाद और उलझन के चरम में, पौलुस की व्यावहारिक बिनती ''यहूदियों की कथा-कहानियों और उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन न'' लगाने की है (1:14)। भावनात्मक क्षण और सुधार के हालात (जहां बहुत बातें करना आवश्यक होता है) में, तथ्यों के साथ मिथ्य को मिलाकर ईश्वरीय नियमों की जगह मनुष्य की प्राथमिकताओं को जगह देना आसान होता है। *हमारे पास ऐसे परिपक्व लोग होने आवश्यक हैं जो धन के लोभियों को खरी शिक्षा से और कायल करके समझा सकें!*

सदस्य अपने इर्द-गिर्द के लोगों से ऊपर उठ सकते हैं (पद 15, 16)

जैसा हम सोचते हैं वैसे ही हम हो जाते हैं (नीतिवचन 23:7)। हम बाहर से जो भी हों, परन्तु जो अन्दर से हैं उसी से हमारे कार्य और प्रत्युत्तर तय होते होंगे। भ्रष्ट क्रेते में पौलुस अभी भी लिख पाया, ''शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तुएं शुद्ध हैं''[33] (तीतुस 1:15)। शुद्ध व्यक्ति निषेधित वस्तुओं के सामने अपने आप को बचाए रख सकता है, किसी पर शीघ्र दोष लगाने से बच सकता है, और किसी गंदे माहौल से बिना कलंकित हुए गुज़र सकता है।

''अशुद्ध''[34] होने से निश्चित तौर पर शुद्धता को प्राथमिकता दी जाती है। समस्या तो दोहरे स्वभाव की है। अशुद्ध व्यक्ति मन (जो अब सही नहीं सोचता) और विवेक (जो अब परवाह नहीं करता) दोनों में दूषित हो चुका है। पहला तीमुथियुस 4:1-3 ऐसे लोगों की बात करता है जो भरमाने वाली आत्माओं की ओर ध्यान देते और उनका विवेक जलते हुए लोहे से दागा गया हो।

यह मनुष्य जाति का स्वाभाविक चलन या व्यवहार नहीं है। ''सांचे'' से मिलते -

जुलते शब्द का पौलुस का उपयोग यह समझाता है कि स्वाभाविक या सामान्य को अस्वाभाविक और असामान्य में बदल दिया गया है। परमेश्वर ने हमें उससे कहीं अच्छे बनाया था। इसे इब्रानियों 5:11 से मिलाएं, जहां लेखक ने कुछ लोगों पर ''ऊंचा सुनने वाले'' होने का आरोप लगाया। ये लोग जन्म से अन्धे नहीं थे। ''उन्होंने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं'' (सभोपदेशक 7:29)। जो काम तीतुस को दिया गया था और हर सुसमाचार प्रचारक के सामने है वह परमेश्वर द्वारा दी गई मनुष्य की प्रतिष्ठा को बहाल करना है!

जबकि साफ़ मन वाले लोग तो शुद्ध बातों की ओर ही ध्यान देंगे, परन्तु जो अशुद्ध हैं परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होने का दावा तो करेंगे परन्तु दबाव से उसका ''इन्कार''[35] करेंगे (1:16)। वे भक्ति भरा जीवन बिताने की प्रतिज्ञा तो करते हैं परन्तु केवल ''कहते''[36] ही हैं। कितने ही लोग हैं जो कहते हैं, ''मैं जानता हूं कि यह सही है'' और फिर तुरन्त उसके विपरीत कार्य करते हैं? उन्हें मत्ती 7:15–23; 23:2, 3 में मसीह के शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए।

घृणित और आज्ञा न मानने वाले लोगों को, भले कामों के विपरीत जो तीतुस के नाम पौलुस की पत्री में सुनहरी धागे की तरह पिरोया गया है, ''किसी अच्छे काम के योग्य नहीं''[37] कहा गया है। जब परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए हुए लोगों का नाश होता है तो कितना दुख होता है!

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरित (यू.: *apostolos*) – ''संदेशवाहक, आदेश देकर भेजा गया'' (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम्ज़, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ़ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क, ग्रैंड रैपिड्स मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 68)। [2]भक्ति (यू.: *eusebeia*) – ''श्रद्धा, सम्मान, बाइबल में हर जगह परमेश्वर के प्रति निष्ठा, भक्ति, प्रेरितों 3:12; 1 तीमु. 2:2; 4:7, 8; 6:5 ... 2 तीमु. 3:5'' (थेयर, 259); ''... मन की स्पष्ट भावना का संकेत देता ... धर्म, सुसमाचार की योजना'' (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 307)। [3]आशा (यू.: *elpis*) – ''अनन्त उद्धार की आनन्दपूर्ण और पक्की उम्मीद, प्रेरितों 23:6 ... आशा की निश्चितता और सामर्थ, इब्रा. 6:11'' (थेयर, 205–06)। [4]प्रकट (यू.: *phaneroo*) – ''जो पहले से गुप्त या अज्ञात हो उसे सामने लाना या बताना ... अब वास्तविक और दृश्यमान की गई है अर्थात इसे महसूस कर सकते हैं ... स्पष्ट तौर पर पहचानना, अच्छी तरह समझना'' (थेयर, 648)। [5]आज्ञा (यू.: *epitage*) – ''अधिकार के हर सम्भावित रूप के साथ, तीतुस 2:15 ... आदेश, हुक्म ... 1 तीमु. 1:1; तीतु. 1:3'' (थेयर, 244)। [6]सच्चा पुत्र (यू.: *gnesion*) – ''वैध संतान, अवैध नहीं बल्कि वास्तविक: फिलि. 4:3; 1 तीमु. 1:2; तीतु. 1:4'' (थेयर, 119)। [7]अनुग्रह (यू.: *charis*) – जिससे ''आनन्द, सुख, मोह, स्नेह, ... सदिच्छा, प्रेममय कृपा, स्वीकृति मिले ... कृपा जिसके कोई योग्य न हो ... दया भरी कृपा जिससे परमेश्वर लोगों को अपना आत्मिक प्रभाव डालकर उन्हें मसीह में बदलता है, रखता, दृढ़ करता, मसीही विश्वास, ज्ञान, स्नेह में और मसीही गुणों को व्यवहार में लाने के लिए उन पर दया करने से दिखाता है।'' (थेयर, 665–66)। [8]शांति (यू.: *eirene*) – ''लोगों में पाई जाने वाली शांति, ... स्थिरता, मेल, संधी ... व्यवस्था ... सुरक्षा ... खुशहाली ... मसीह के द्वारा उद्धार का आश्वासन पाने

वाले आत्मा की शांत'' अवस्था ''जिसमें परमेश्वर से कोई भय न हो और पृथ्वी पर रहते हुए संतुष्टि हो'' (थेयर, 182)। [9]सामान्य रूप में ट्रेनिंग के हमारे कार्यक्रम (मसीही कॉलेज, प्रीचिंग के स्कूल, बाइबल पीठें आदि) में मसीह की देह में ऐल्डर बनने के लिए लोगों को परिपज्व करने का सिलेबस बहुत सीमित होता है या होता ही नहीं। हमने लोगों को प्रचारक बनने, यूथ डायरेज़्टर बनने, संगीत निर्देशक, और मिशनरी बनने की ट्रेनिंग दी है, परन्तु ऐल्डरों की ट्रेनिंग को हमने सप्ताहांत में होने वाले सेमिनारों तक सीमित कर दिया है! प्रभु ने हमें इन्हीं लोगों की बात मानने का आदेश दिया है, और यही लोग हमारी आत्माओं का हिसाब देने के लिए जिज़्मेदार होंगे (इब्रानियों 13:17)। मसीह की वाचा हमें सिलेबस बताती है (देखिए 1 पतरस 1:1-5; 1 थिस्स. 5:12-22; प्रेरितों 20:17-38), परन्तु हम अज़्सर इसका ध्यान नहीं करते या अच्छी तरह सिखाते नहीं हैं। इसकी कीमत हमें यह चुकानी पड़ी है कि बहुत सी मण्डलियों में ऐल्डर नहीं हैं या कुछ लोग ऐल्डरों के रूप में सेवा तो कर रहे हैं परन्तु उन्हें कभी सही शिक्षा नहीं मिली या उस कार्य के लिए जो उन्हें दिया गया गंभीरता से लेने के लिए आत्मिक नींव नहीं डाली गई। [10]इसलिए (यू.: *charin*) - ''के समर्थन में, के आनन्द के लिए ... की खातिर होना ... 1 तीमु. 5:14; तीतु. 1:11; यहूदा 16 ... इस कारण, इफि. 3:1; तीतुस 1:5 ...।'' (थेयर, 665)।

[11]रही हुई (यू.: *epidiorthose*) - यह तथ्य कि यह अकर्मक है का अर्थ *कुछ भी* हो सकता है। मूल शज़्द *leipo* का अर्थ है ''पीछे ... छोड़ना ... भूलना ... पिछड़ना, अधीन होना, याकूब 1:4 ... से वंचित होना ... याकूब 1:5; 2:15 ... कमी होना या अनुपस्थित, असफल होना ... तीतुस 3:12 ... 1:5'' (थेयर, 375)। [12]सुधारना(यू.: *ta leiponta epidiorthose*) - ''(पहले किए सुधार) में जोड़ते हुए ठीक करना या सुधारना ... जो रह गया है तीतुस 1:5'' (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़िसकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर क्रिश्चियन लिटरेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़ अर्ड्ट एण्ड एफ़ विल्बर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 1957], 292)। [13]नियुज़्त किए जाने से पहले, जिन बातों में कमी पाई जाती है पहले उन्हें सुधारने की बुद्धि पर विशेषता देह में एकता पर ध्यान देना अच्छी बात है। यदि ऐसा नहीं होता, तो कोई भी झगड़ा या अव्यवस्था मण्डली के बीच स्थाई तौर पर रह सकती है। [14]नियुज़्त (यू.: *katastema*) - ''पदवी, दर्जा, चरित्र, बर्ताव; तीतुस 2:3'' (रोबिन्सन, 389)। [15]ऐल्डरों के लिए लोगों के चुनाव और नियुज़्ति पर चर्चा के लिए डेयटन कीसी, की पुस्तक *ए री इन्वेलुएशन आ़फ़ द ऐल्डरशिप* (अबिलेन, टैज़्स.: ज़्वालिटी पज़्लिकेशंज़, 1967), 40-47 में मिलता है। [16]निर्देश (यू.: *diatasso*) - ''पूरा प्रबन्ध करना, व्यवस्थित करना ... पूरी तरह से सुधारना ... नियुज़्त करना ... ठहराना, आज्ञा देना'' (रोबिन्सन, 176); ''सलाह देना, आदेश देना ... मज़ी 11:1; 1 कुरिं. 16:1 ... तीतु. 1:5'' (थेयर, 142)। [17]1 तीमुथियुस 3:1-8 और तीतुस 1:6-9 पर दिए चार्ट में इन योग्यताओं की समीक्षा करें। [18]निर्दोष (यू.: *anegkletos*) - ''जिसे हिसाब देने के लिए बुलाया न जा सकता हो, अनिन्दनीय, जिस पर दोष न लगाया जा सके, दोष रहित ... 1 तीमु 3:10; तीतु. 1:6'' (थेयर, 44)। [19]योग्य (यू.: *dunamai*) - ''कुछ करने के योग्य ... समर्थ होना ... मरकुस 9:22; लूका 12:26; 2 कुरिन्थियों 13:8 ... सक्षम, मज़बूत, शज़्तिशाली; 1 कुरिन्थियों 3:2; 10:13'' (थेयर, 158-59)। [20]उपदेश (यू.: *parakaleo*) - ''अपनी ओर बुलाना ... सज़्बोधन करना, बात करना ... हार्दिक प्रार्थना, सांत्वना, ताड़ना करना ... दिलासा देना, दिलासा देकर प्रोत्साहन व सामर्थ देना ... ताज़गी देना, आराम देना ... निर्देश देना, सिखाना'' (थेयर, 482-83)।

[21]विवाद (यू.: *antilego*) - ''विरोद्ध में बोलना, खंडन करना, विरोध करना ... किसी के विरुद्ध होना, उसकी बात मानने से इन्कार करना ... उसके साथ किसी प्रकार का सज़्बन्ध होने से इन्कार करना'' (थेयर, 50)। [22]मुंह बन्द करना (यू.: *elegcho*) - ''कायल करना, झूठा सिद्ध करना, खण्डन करना, ... अपराध, गलती या कसूर का, पाप को, 1 कुरिं. 14:24 ... याकूब 2:9 ... कायल करके प्रकाश में या सामने लाना ... यू. 3:20, तु. 21; इफि. 5:11, 13 ... मसीहियत के झूठे शिक्षकों को सामने लाने और अप्रमाणित सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शज़्द, तीतु. 1:9, 13 ... सुधारना; ... वचन के द्वारा कठोरता से फटकारना, ताड़ना, डांटना, सुधारना; यहूदा 22 ... किसी को उसकी गलती दिखना ... ताड़ने, दण्ड देने के लिए, प्रकाशित. 3:19'' (थेयर, 202-3)। [23]यह विडज़्बना ही है कि एक प्रमुख कलीसिया के शिक्षक क्षेत्र

में इसके ''ज़्लर्जी'' के लिए (जिसमें बिशप भी शामिल हैं - इब्रानियों 13:4 देखिए) विवाह करने की मनाही हो, जो कि प्रजु की कलीसिया में बिशपों या अध्यक्षों के रूप में सेवा करने वालों के लिए पौलुस की मांगों के बिल्कुल विपरीत है। अपने पारिवारिक जीवन से ही कोई यह प्रमाणित करता है कि वह परमेश्वर के परिवार की देखभाल कर सकता है। सचमुच जब शैतान कोई और कलीसिया शुरू कर देता है, तो वह शिक्षा में बदलाव करके ही ऐसा करता है (रोमियों 16:17, 18; 1 यूहन्ना 4:1; प्रेरितों 17:11; 20:28, 29)। [24]हठ (यू.: *asotia*) - ''त्यागे हुए व्यज़्ति की'' विशेषता, ''जिसका उद्धार न हो सकता हो ... जिसे क्षमा न मिल सकती हो ...'' (थेयर, 82)। [25]निरंकुशता (यू.: *anupotaktos*) - जिसे ''नियन्त्रण में न लाया जा सकता हो, अवज्ञाकार, बे - लगाम, विद्रोही; 1 तीमुथियुस 1:9; तीतुस 1:6, 10'' (थेयर, 52)। [26]अपने आपको काबू में रखना (यू.: *egkrates*) - ''दृढ़ होना ..., अपने ऊपर शज़्ति रखना, अधिकार रखना, नियन्त्रण रखना, दबाव, संयम रखना'' (थेयर, 167)। [27]निरंकुश (यू.: *anupotaktos*) - उसका चित्रण जो ''वश में न किया जा सकता हो, अवज्ञाकार ... 1 तीमु. 1:9; तीतुस 1:6, 10 ... उलझन में पड़ा'' (थेयर, 52)। [28]बकवादी (यू.: *psataiologia*) - जो ''फिज़ूल, व्यर्थ बातों'' में लगा ''... व्यर्थ चर्चा की ओर मुड़ गया हो, 1 तीमु. 1:6.'' (अर्ड्ट एण्ड गिंगरिक, 496); ''... व्यर्थ शोर'' (रोबिन्सन, 446)। [29]धोखा देने वाला (यू.: *phrenapates*) - ''धोखेबाज ... प्रलोभन देने वाला ... तीतुस 1:10'' (थेयर, 657-58)। क्रिया रूप *phrenapatao* पर थेयर ने ''इस शज़्द का अर्थ *apatan* से अधिक है, इसलिए इसमें अधीन कल्पनाओं का संकेत मिलता है'' जोड़ते हुए, गलतियों 6:3 का नाम लिया। [30]बिगाड़ना (यू.: *anatrepo*) - ''गिराना, नाश करना, नीतिशास्त्र की दृष्टि से मटियामेट करना। तीतु. 1:11'' (थेयर, 48)।

[31]कड़ाई से (यू.: *apotomos*) - ''... कठोरता से, बिल्कुल ... पूरी तरह से ... निर्णायक ढंग से, सज़्ती से, 2 कुरिं. 13:10; तीतु. 1:13'' (रोबिन्सन, 89)। [32]चितौनी (यू.: *elegche*) - आदेश सूचक का अर्थ है कि सुसमाचार प्रचारक के लिए यह करना *आवश्यक है।* उठाया जाने वाला कदम *उन्हें सुधारने* या समझाने के लिए होना चाहिए, जो कि ''1:9'' में ''मुंह बंद करना'' शज़्द है। [33]शुद्ध (यू.: *katharos*) - ''साफ़, ... मिट्टी रहित ... शारीरिक तौर पर ... नियानुसार, निषेधित नहीं ... दोष रहित, निर्दोष, ... गंभीर, सही, बुराई से परे। ...'' (रोबिन्सन, 362)। [34]अशुद्ध (यू.: *memiantai*) - ''दूसरे रंग से रगे जाना, दागी होना ... गंदा, भ्रष्ट, गंदला ... शारीरिक और नैतिक अर्थ में ... वासना से भरा होना, यहूदा 8 ... तीत. 1:15 ...'' (थेयर, 414)। [35]इन्कार (यू.: *arneomai*) - ''किसी का भी उसके दावे से इन्कार करना; 1 यू. 2:22 ... त्यागना, रद्द करना, स्वीकार न करना ... अपने ही चरित्र और घोषणा पर पूरा न उतरना, अपनी पहचान के अनुसार न करना ... त्याग देना और छोड़ना'' (रोबिन्सन, 95)। [36]कहते (यू.: *omologeo*) - ''कहना कुछ और करना कुछ ... मानना ... प्रतिज्ञा करना ... अंगीकार, घोषणा करना ... किसी के अपना पाप मान लेने या बदलने को मानकर'' (थेयर, 446)। [37]किसी अच्छे काम के योग्य न होना (यू.: *adokimos*) - ''जिसे ठुकराया गया ... दण्ड के योग्य। ... जिस कारण लोगों के लिए व्यर्थ, लाभरहित, तीतु. 1:16 ... व्यर्थ'' (रोबिन्सन, 14)।